ज़िन्दगी

चन्द अल्फ़ाज़ों

की....

शलभ भटनागर

……..

यह पुस्तक मैं अपने माता-पिता,भाई- बहन और अपने सारे परिवार को समर्पित करता हूँ और हर उस व्यक्ति को जो ज़िन्दगी के कुछ लम्हों को शब्दों की नगरिया से देखना चाहता है, उसे समर्पित करता हूँ ……..

आभार.....

मैं अपनी कविता का श्रेय अपने माता-पिता और अपने गुरु को देता हूँ जिन्होंने मुझे बचपन में प्रोत्साहन दिया। और इस ज़िन्दगी को, जिसने मुझे हर दर पे मौके दिये, इन सुनहरे अल्फ़ाज़ों को, जिन्होंने ज़िन्दगी की राह पे अपना दामन दिया और दिल की बात बयान करने का एक सहारा दिया।

कविता सूची

प्रस्तावना

दो लफ्ज़ .....

1. ये कीमती पल 19

2. बचपन का सुनहरा सफ़र 22

3. ज़िन्दगी का भंवर 26

4. कुछ हसीं पल 30

5. मैं चला जाऊंगा 33

6. सॉरी 36

7. क्यूँ इतनी नाराज़ है तू 38

8. तुझसे प्यार करने दो 41

9. तेरी याद 43

कविता सूची

10. कभी-कभी 46

11. एक आस 49

12. अधूरी कहानी 51

13. नया सवेरा 53

14. शेर-ओ-शायरी 56

प्रस्तावना

एक किताब ही है जो मेरा ग़म समझती है। मैं जो इसे कहता हूँ अपने तक ही रखती है....

मैं अपनी डायरी आपके हवाले कर रहा हूँ, जिसमें कुछ लम्हों को मैंने कविता के रूप में संजोया है, कुछ अनकही-अनसुनी दास्तानों को समेटा है। मैंने जीवन के बवंडर को अल्फ़ाज़ों की दृष्टि से देखने की एक कोशिश की है, शायद आप भी अपनी ज़िन्दगी का दर्पण इन कुछ अल्फ़ाज़ों में पाएँ, आप भी अपनी ज़िन्दगी के कुछ पन्ने पलट पाएँ और शायद कुछ ग़म और खुशियाँ हम आपस में बाँट पाएँ।

- शलभ